



Vikas

21 Jul 1997

09:00 AM

Yamunanagar

Model: Web-KundliPhal

Order No: 121815401

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 21/07/1997
दिन _____: सोमवार
जन्म समय _____: 09:00:00 घंटे
इष्ट _____: 08:37:37 घटी
स्थान _____: Yamunanagar
राज्य _____: Haryana
देश _____: India

अक्षांश _____: 30:07:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:18:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:20:48 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 08:39:12 घंटे
वेलान्तर _____: -00:06:23 घंटे
साम्पातिक काल _____: 04:34:58 घंटे
सूर्योदय _____: 05:32:57 घंटे
सूर्यास्त _____: 19:21:01 घंटे
दिनमान _____: 13:48:04 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 04:35:48 कर्क
लग्न के अंश _____: 17:42:45 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी _____: मकर - शनि
नक्षत्र-चरण _____: श्रवण - 3
नक्षत्र स्वामी _____: चन्द्र
योग _____: प्रीति
करण _____: तैतिल
गण _____: देव
योनि _____: वानर
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: मार्जार
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: खे-खेमचन्द्र
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कर्क

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

| कैलेंडर | वर्ष | मास | तिथि/प्रविष्टे |
|------------|---------------|--------|----------------|
| राष्ट्रीय | शक : 1919 | आषाढ़ | 30 |
| पंजाबी | संवत : 2054 | श्रावण | 6 |
| बंगाली | सन् : 1404 | श्रावण | 5 |
| तमिल | संवत : 2054 | आदी | 6 |
| केरल | कोल्लम : 1172 | कर्कदम | 5 |
| नेपाली | संवत : 2054 | श्रावण | 6 |
| चैत्रादि | संवत : 2054 | श्रावण | कृष्ण 1 |
| कार्तिकादि | संवत : 2054 | आषाढ़ | कृष्ण 1 |

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 1
तिथि समाप्ति काल _____ : 05:39:10
जन्म तिथि _____ : 2
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : श्रवण
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 16:44:56 घंटे
जन्म योग _____ : श्रवण
सूर्योदय कालीन योग _____ : प्रीति
योग समाप्ति काल _____ : 14:21:56 घंटे
जन्म योग _____ : प्रीति
सूर्योदय कालीन करण _____ : कौलव
करण समाप्ति काल _____ : 05:39:10 घंटे
जन्म करण _____ : तैतिल
भयात _____ : 34:32:00
भभोग _____ : 53:54:18
भोग्य दशा काल _____ : चंद्र 3 वर्ष 7 मा 5 दि

घात चक्र

मास _____ : वैशाख
तिथि _____ : 4-9-14
दिन _____ : मंगलवार
नक्षत्र _____ : रोहिणी
योग _____ : वैधृति
करण _____ : शकुनि
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : मूषक
लग्न _____ : कुम्भ
सूर्य _____ : कुम्भ
चन्द्र _____ : सिंह
मंगल _____ : मीन
बुध _____ : धनु
गुरु _____ : मेष
शुक्र _____ : वृष
शनि _____ : मकर
राहु _____ : मिथुन

Pt. Rahul Sharma

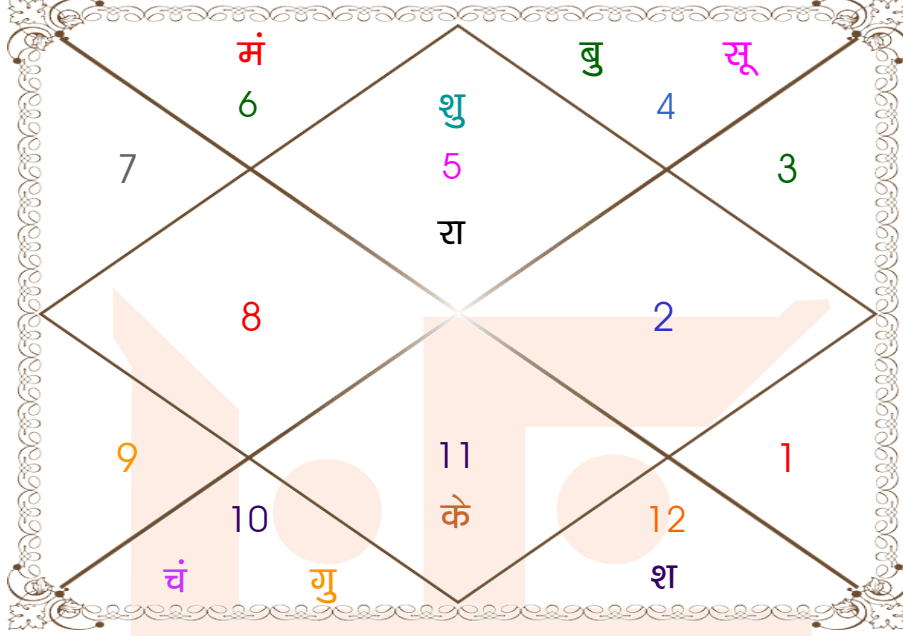
Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

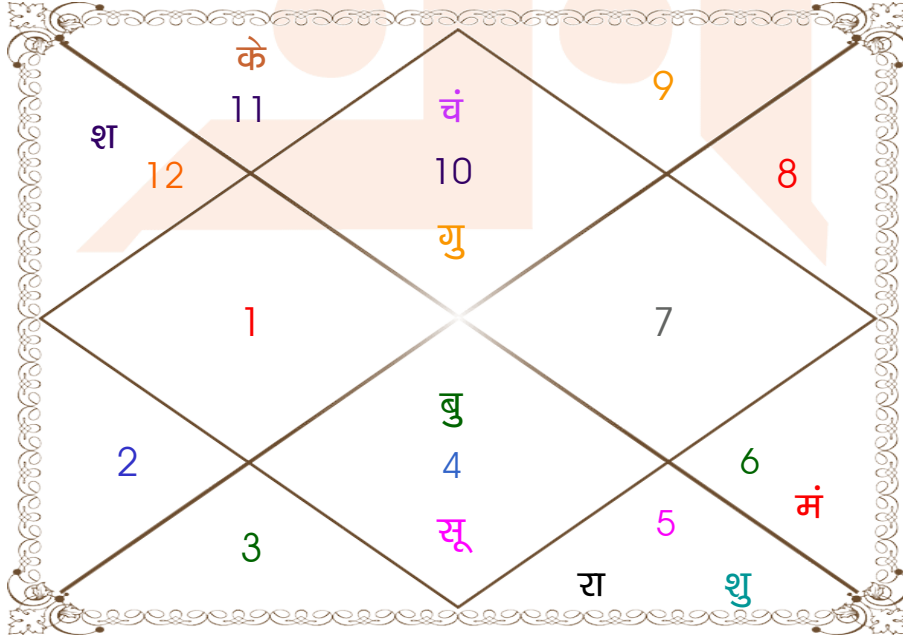
rs96531@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

| | | | |
|----------|--|--|---------------|
| श | | | |
| के | | | बु सू |
| गु चं | | | रा ल शु |
| | | | मं |

लग्न कुंडली

| | | | |
|----------|---------|----------|--|
| | | श | |
| | | के | |
| बु सू | | गु चं | |
| शु रा | ल मं | | |

विंशोत्तरी
चन्द्र 3वर्ष 7मा 5दि
चन्द्र

21/07/1997

26/02/2111

| | |
|--------|------------|
| चन्द्र | 24/02/2001 |
| मंगल | 25/02/2008 |
| राहु | 25/02/2026 |
| गुरु | 25/02/2042 |
| शनि | 24/02/2061 |
| बुध | 25/02/2078 |
| केतु | 24/02/2085 |
| शुक्र | 25/02/2105 |
| सूर्य | 26/02/2111 |

योगिनी

मंगला 0वर्ष 4मा 9दि
संकटा

29/11/2024

29/11/2032

| | |
|---------|------------|
| संकटा | 09/09/2026 |
| मंगला | 30/11/2026 |
| पिंगला | 11/05/2027 |
| धान्या | 09/01/2028 |
| भामरी | 29/11/2028 |
| भद्रिका | 09/01/2030 |
| उल्का | 11/05/2031 |
| सिद्धा | 29/11/2032 |

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

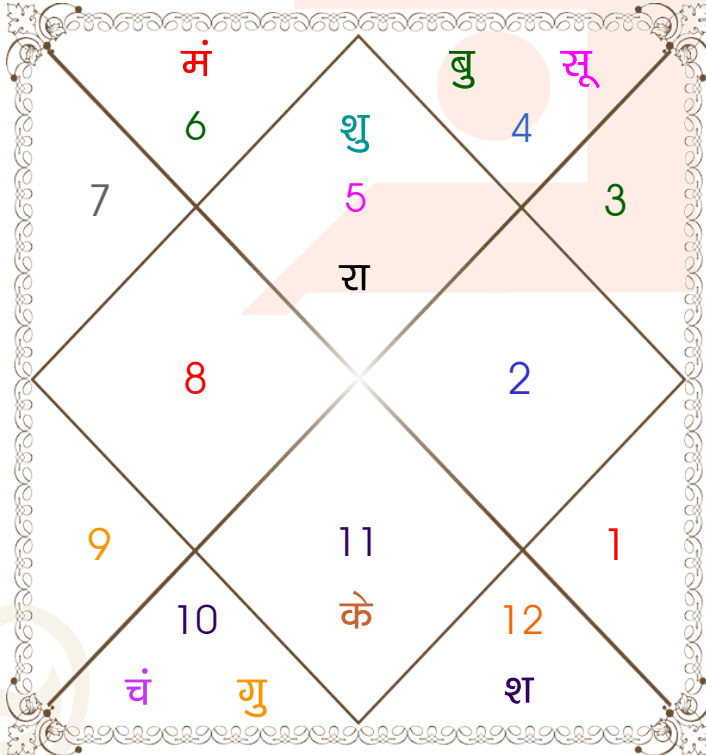
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

| ग्रह | व | अ | राशि | अंश | गति | नक्षत्र | पद | नं. | रा | न | अं. | स्थिति |
|---------|---|---|--------|----------|-----------|-------------|----|-----|-------|-------|-------|------------|
| लग्न | | | सिंह | 17:42:45 | 312:01:25 | पू०फाल्गुनी | 2 | 11 | सूर्य | शुक्र | मंगल | --- |
| सूर्य | | | कर्क | 04:35:48 | 00:57:15 | पुष्य | 1 | 8 | चंद्र | शनि | शनि | मित्र राशि |
| चंद्र | | | मक | 18:32:05 | 14:51:17 | श्रवण | 3 | 22 | शनि | चंद्र | बुध | सम राशि |
| मंगल | | | कन्या | 22:01:14 | 00:33:09 | हस्त | 4 | 13 | बुध | चंद्र | शुक्र | शत्रु राशि |
| बुध | | | कर्क | 28:02:37 | 01:28:56 | आश्लेषा | 4 | 9 | चंद्र | बुध | शनि | शत्रु राशि |
| गुरु | व | | मक | 25:35:44 | 00:06:46 | धनिष्ठा | 1 | 23 | शनि | मंगल | राहु | नीच राशि |
| शुक्र | | | सिंह | 03:16:33 | 01:12:22 | मघा | 1 | 10 | सूर्य | केतु | सूर्य | शत्रु राशि |
| शनि | | | मीन | 26:25:24 | 00:01:11 | रेवती | 3 | 27 | गुरु | बुध | गुरु | सम राशि |
| राहु | व | | सिंह | 27:05:21 | 00:05:27 | उ०फाल्गुनी | 1 | 12 | सूर्य | सूर्य | सूर्य | शत्रु राशि |
| केतु | व | | कुंभ | 27:05:21 | 00:05:27 | पू०भाद्रपद | 3 | 25 | शनि | गुरु | शुक्र | शत्रु राशि |
| हर्ष | व | | मक | 13:13:07 | 00:02:22 | श्रवण | 1 | 22 | शनि | चंद्र | राहु | --- |
| नेप | व | | मक | 04:45:00 | 00:01:37 | उत्तराषाढा | 3 | 21 | शनि | सूर्य | शनि | --- |
| प्लूटो | व | | वृश्चि | 09:09:04 | 00:00:44 | अनुराधा | 2 | 17 | मंगल | शनि | शुक्र | --- |
| दशम भाव | | | वृष | 16:32:05 | -- | रोहिणी | -- | 4 | शुक्र | चंद्र | शनि | -- |

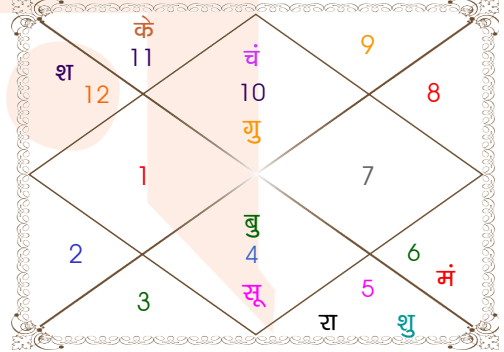
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:49:21

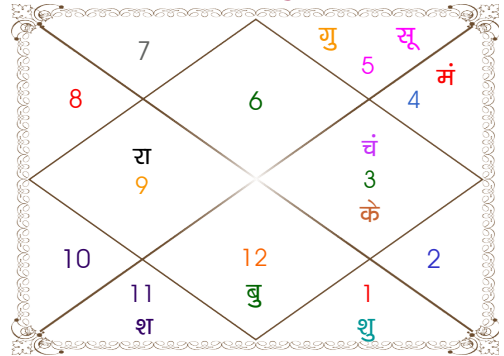
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

| भाव | भाव संधि | भाव मध्य |
|-----|------------------|------------------|
| 1 | सिंह 02:30:59 | सिंह 17:42:45 |
| 2 | कन्या 02:30:59 | कन्या 17:19:12 |
| 3 | तुला 02:07:25 | तुला 16:55:38 |
| 4 | वृश्चिक 01:43:52 | वृश्चिक 16:32:05 |
| 5 | धनु 01:43:52 | धनु 16:55:38 |
| 6 | मकर 02:07:25 | मकर 17:19:12 |
| 7 | कुम्भ 02:30:59 | कुम्भ 17:42:45 |
| 8 | मीन 02:30:59 | मीन 17:19:12 |
| 9 | मेष 02:07:25 | मेष 16:55:38 |
| 10 | वृष 01:43:52 | वृष 16:32:05 |
| 11 | मिथुन 01:43:52 | मिथुन 16:55:38 |
| 12 | कर्क 02:07:25 | कर्क 17:19:12 |

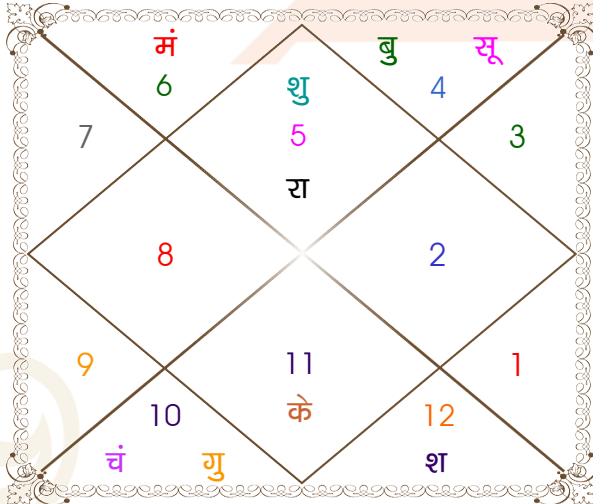
निरयण भाव चलित

| भाव | राशि | अंश |
|-----|---------|----------|
| 1 | सिंह | 17:42:45 |
| 2 | कन्या | 14:19:55 |
| 3 | तुला | 14:27:56 |
| 4 | वृश्चिक | 16:32:05 |
| 5 | धनु | 18:33:50 |
| 6 | मकर | 19:13:18 |
| 7 | कुम्भ | 17:42:45 |
| 8 | मीन | 14:19:55 |
| 9 | मेष | 14:27:56 |
| 10 | वृष | 16:32:05 |
| 11 | मिथुन | 18:33:50 |
| 12 | कर्क | 19:13:18 |

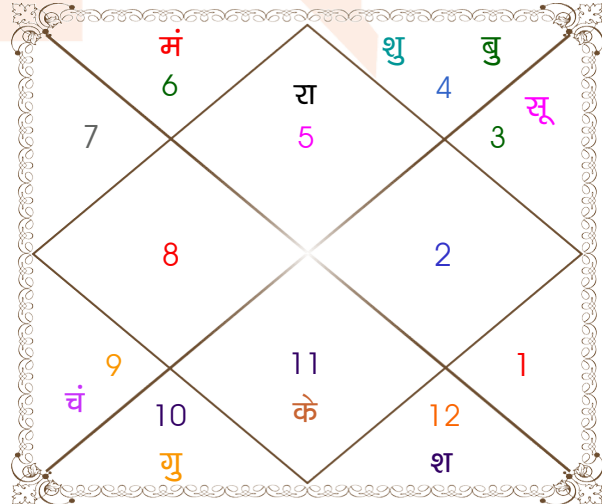
तारा चक्र

| जन्म | सम्पत | विपत | क्षेम | प्रत्यारि | साधक | वध | मित्र | अतिमित्र |
|--------|---------|---------|------------|-----------|----------|---------|-------------|------------|
| श्रवण | धनिष्ठा | शतभिषा | पू०भाद्रपद | उ०भाद्रपद | रेवती | अश्विनी | भरणी | कृतिका |
| रोहिणी | मृगशिरा | आर्द्रा | पुनर्वसु | पुष्य | आश्लेषा | मघा | पू०फाल्गुनी | उ०फाल्गुनी |
| हस्त | चित्रा | स्वाति | विशाखा | अनुराधा | ज्येष्ठा | मूल | पूर्वाषाढा | उत्तराषाढा |

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

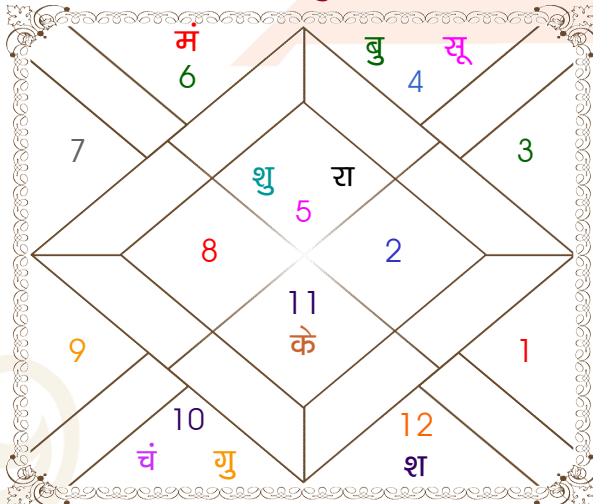
कारक, अवस्था, रश्मि

| ग्रह | कारक | | | अवस्था | | | ग्रह बल |
|-------|--------|--------|--------|----------|-----------|-------|---------|
| | चर | स्थिर | बालादि | दीप्तादि | शयनादि | रश्मि | |
| सूर्य | ज्ञाति | पितृ | मृत | मुदित | नेत्रपाणि | 5.30 | 68 % |
| चंद्र | पुत्र | मातृ | कुमार | शक्त | कौतुक | 4.53 | 67 % |
| मंगल | मातृ | भातृ | कुमार | खल | आगम | 1.50 | 43 % |
| बुध | आत्मा | ज्ञाति | बाल | खल | कौतुक | 1.48 | 29 % |
| गुरु | भातृ | धन | बाल | भीत | सभा | 0.96 | 36 % |
| शुक्र | कलत्र | कलत्र | बाल | खल | कौतुक | 2.39 | 71 % |
| शनि | अमात्य | आयु | बाल | निपीदित | कौतुक | 0.79 | 23 % |
| राहु | --- | ज्ञान | मृत | खल | कौतुक | 0.00 | 36 % |
| केतु | --- | मोक्ष | मृत | खल | आगम | 0.00 | 36 % |
| कुल | | | | | | 16.95 | |

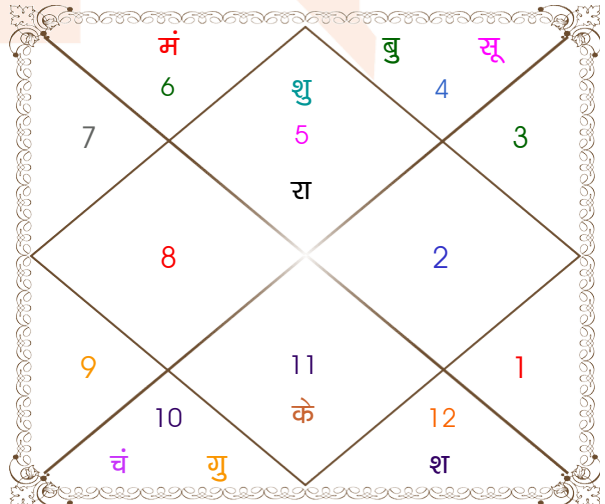
तारा चक्र

| जन्म | सम्पत | विपत | क्षेम | प्रत्यारि | साधक | वध | मित्र | अतिमित्र |
|--------|---------|---------|------------|-----------|----------|---------|-------------|------------|
| श्रवण | धनिष्ठा | शतभिषा | पू०भाद्रपद | उ०भाद्रपद | रेवती | अश्विनी | भरणी | कृतिका |
| रोहिणी | मृगशिरा | आर्द्रा | पुनर्वसु | पुष्य | आश्लेषा | मघा | पू०फाल्गुनी | उ०फाल्गुनी |
| हस्त | चित्रा | स्वाति | विशाखा | अनुराधा | ज्येष्ठा | मूल | पूर्वाषाढा | उत्तराषाढा |

चलित कुंडली



लग्न-चलित



Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 3 वर्ष 7 मास 5 दिन

| चंद्र 10 वर्ष | मंगल 7 वर्ष | राहु 18 वर्ष | गुरु 16 वर्ष | शनि 19 वर्ष |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 21/07/1997 | 24/02/2001 | 25/02/2008 | 25/02/2026 | 25/02/2042 |
| 24/02/2001 | 25/02/2008 | 25/02/2026 | 25/02/2042 | 24/02/2061 |
| 00/00/0000 | मंगल 24/07/2001 | राहु 07/11/2010 | गुरु 14/04/2028 | शनि 27/02/2045 |
| 00/00/0000 | राहु 11/08/2002 | गुरु 02/04/2013 | शनि 26/10/2030 | बुध 08/11/2047 |
| 00/00/0000 | गुरु 18/07/2003 | शनि 07/02/2016 | बुध 31/01/2033 | केतु 16/12/2048 |
| 00/00/0000 | शनि 26/08/2004 | बुध 26/08/2018 | केतु 07/01/2034 | शुक्र 16/02/2052 |
| 21/07/1997 | बुध 23/08/2005 | केतु 14/09/2019 | शुक्र 07/09/2036 | सूर्य 28/01/2053 |
| बुध 27/05/1998 | केतु 19/01/2006 | शुक्र 14/09/2022 | सूर्य 26/06/2037 | चंद्र 29/08/2054 |
| केतु 26/12/1998 | शुक्र 21/03/2007 | सूर्य 08/08/2023 | चंद्र 26/10/2038 | मंगल 08/10/2055 |
| शुक्र 26/08/2000 | सूर्य 27/07/2007 | चंद्र 06/02/2025 | मंगल 02/10/2039 | राहु 14/08/2058 |
| सूर्य 24/02/2001 | चंद्र 25/02/2008 | मंगल 25/02/2026 | राहु 25/02/2042 | गुरु 24/02/2061 |

| बुध 17 वर्ष | केतु 7 वर्ष | शुक्र 20 वर्ष | सूर्य 6 वर्ष | चंद्र 10 वर्ष |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 24/02/2061 | 25/02/2078 | 24/02/2085 | 25/02/2105 | 26/02/2111 |
| 25/02/2078 | 24/02/2085 | 25/02/2105 | 26/02/2111 | 00/00/0000 |
| बुध 24/07/2063 | केतु 24/07/2078 | शुक्र 26/06/2088 | सूर्य 15/06/2105 | चंद्र 27/12/2111 |
| केतु 20/07/2064 | शुक्र 23/09/2079 | सूर्य 26/06/2089 | चंद्र 15/12/2105 | मंगल 27/07/2112 |
| शुक्र 21/05/2067 | सूर्य 29/01/2080 | चंद्र 25/02/2091 | मंगल 21/04/2106 | राहु 26/01/2114 |
| सूर्य 27/03/2068 | चंद्र 29/08/2080 | मंगल 26/04/2092 | राहु 16/03/2107 | गुरु 28/05/2115 |
| चंद्र 26/08/2069 | मंगल 25/01/2081 | राहु 27/04/2095 | गुरु 02/01/2108 | शनि 27/12/2116 |
| मंगल 23/08/2070 | राहु 12/02/2082 | गुरु 26/12/2097 | शनि 14/12/2108 | बुध 22/07/2117 |
| राहु 12/03/2073 | गुरु 19/01/2083 | शनि 25/02/2101 | बुध 21/10/2109 | 00/00/0000 |
| गुरु 18/06/2075 | शनि 28/02/2084 | बुध 27/12/2103 | केतु 26/02/2110 | 00/00/0000 |
| शनि 25/02/2078 | बुध 24/02/2085 | केतु 25/02/2105 | शुक्र 26/02/2111 | 00/00/0000 |

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 3 वर्ष 7 मा 4 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| | | | | |
|--|--|--|--|--|
| गुरु - गुरु 25/02/2026 14/04/2028 | गुरु - शनि 14/04/2028 26/10/2030 | गुरु - बुध 26/10/2030 31/01/2033 | गुरु - केतु 31/01/2033 07/01/2034 | गुरु - शुक्र 07/01/2034 07/09/2036 |
| गुरु 09/06/2026 शनि 10/10/2026 बुध 28/01/2027 केतु 15/03/2027 शुक्र 23/07/2027 सूर्य 31/08/2027 चंद्र 04/11/2027 मंगल 19/12/2027 राहु 14/04/2028 | शनि 07/09/2028 बुध 16/01/2029 केतु 11/03/2029 शुक्र 13/08/2029 सूर्य 28/09/2029 चंद्र 14/12/2029 मंगल 06/02/2030 राहु 25/06/2030 गुरु 26/10/2030 | बुध 20/02/2031 केतु 10/04/2031 शुक्र 26/08/2031 सूर्य 06/10/2031 चंद्र 14/12/2031 मंगल 31/01/2032 राहु 04/06/2032 गुरु 22/09/2032 शनि 31/01/2033 | केतु 20/02/2033 शुक्र 18/04/2033 सूर्य 05/05/2033 चंद्र 02/06/2033 मंगल 22/06/2033 राहु 12/08/2033 गुरु 27/09/2033 शनि 20/11/2033 बुध 07/01/2034 | शुक्र 18/06/2034 सूर्य 06/08/2034 चंद्र 26/10/2034 मंगल 22/12/2034 राहु 17/05/2035 गुरु 24/09/2035 शनि 25/02/2036 बुध 12/07/2036 केतु 07/09/2036 |
| गुरु - सूर्य 07/09/2036 26/06/2037 | गुरु - चंद्र 26/06/2037 26/10/2038 | गुरु - मंगल 26/10/2038 02/10/2039 | गुरु - राहु 02/10/2039 25/02/2042 | शनि - शनि 25/02/2042 27/02/2045 |
| सूर्य 22/09/2036 चंद्र 16/10/2036 मंगल 02/11/2036 राहु 16/12/2036 गुरु 24/01/2037 शनि 11/03/2037 बुध 21/04/2037 केतु 08/05/2037 शुक्र 26/06/2037 | चंद्र 06/08/2037 मंगल 03/09/2037 राहु 15/11/2037 गुरु 19/01/2038 शनि 06/04/2038 बुध 14/06/2038 केतु 13/07/2038 शुक्र 02/10/2038 सूर्य 26/10/2038 | मंगल 15/11/2038 राहु 05/01/2039 गुरु 20/02/2039 शनि 15/04/2039 बुध 02/06/2039 केतु 22/06/2039 शुक्र 18/08/2039 सूर्य 04/09/2039 चंद्र 02/10/2039 | राहु 11/02/2040 गुरु 06/06/2040 शनि 23/10/2040 बुध 24/02/2041 केतु 17/04/2041 शुक्र 10/09/2041 सूर्य 23/10/2041 चंद्र 05/01/2042 मंगल 25/02/2042 | शनि 18/08/2042 बुध 20/01/2043 केतु 25/03/2043 शुक्र 25/09/2043 सूर्य 18/11/2043 चंद्र 18/02/2044 मंगल 22/04/2044 राहु 04/10/2044 गुरु 27/02/2045 |
| शनि - बुध 27/02/2045 08/11/2047 | शनि - केतु 08/11/2047 16/12/2048 | शनि - शुक्र 16/12/2048 16/02/2052 | शनि - सूर्य 16/02/2052 28/01/2053 | शनि - चंद्र 28/01/2053 29/08/2054 |
| बुध 17/07/2045 केतु 12/09/2045 शुक्र 23/02/2046 सूर्य 13/04/2046 चंद्र 04/07/2046 मंगल 30/08/2046 राहु 25/01/2047 गुरु 05/06/2047 शनि 08/11/2047 | केतु 01/12/2047 शुक्र 07/02/2048 सूर्य 27/02/2048 चंद्र 01/04/2048 मंगल 24/04/2048 राहु 24/06/2048 गुरु 17/08/2048 शनि 20/10/2048 बुध 16/12/2048 | शुक्र 27/06/2049 सूर्य 24/08/2049 चंद्र 28/11/2049 मंगल 04/02/2050 राहु 27/07/2050 गुरु 29/12/2050 शनि 30/06/2051 बुध 11/12/2051 केतु 16/02/2052 | सूर्य 04/03/2052 चंद्र 02/04/2052 मंगल 23/04/2052 राहु 14/06/2052 गुरु 30/07/2052 शनि 23/09/2052 बुध 11/11/2052 केतु 01/12/2052 शुक्र 28/01/2053 | चंद्र 17/03/2053 मंगल 20/04/2053 राहु 16/07/2053 गुरु 01/10/2053 शनि 31/12/2053 बुध 23/03/2054 केतु 26/04/2054 शुक्र 31/07/2054 सूर्य 29/08/2054 |

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| | | | | |
|--|--|--|--|--|
| शनि - मंगल 29/08/2054 08/10/2055 | शनि - राहु 08/10/2055 14/08/2058 | शनि - गुरु 14/08/2058 24/02/2061 | बुध - बुध 24/02/2061 24/07/2063 | बुध - केतु 24/07/2063 20/07/2064 |
| मंगल 22/09/2054 राहु 22/11/2054 गुरु 15/01/2055 शनि 20/03/2055 बुध 16/05/2055 केतु 09/06/2055 शुक्र 15/08/2055 सूर्य 04/09/2055 चंद्र 08/10/2055 | राहु 12/03/2056 गुरु 29/07/2056 शनि 10/01/2057 बुध 06/06/2057 केतु 06/08/2057 शुक्र 27/01/2058 सूर्य 20/03/2058 चंद्र 14/06/2058 मंगल 14/08/2058 | गुरु 15/12/2058 शनि 11/05/2059 बुध 19/09/2059 केतु 12/11/2059 शुक्र 14/04/2060 सूर्य 31/05/2060 चंद्र 16/08/2060 मंगल 09/10/2060 राहु 24/02/2061 | बुध 29/06/2061 केतु 19/08/2061 शुक्र 13/01/2062 सूर्य 26/02/2062 चंद्र 10/05/2062 मंगल 01/07/2062 राहु 10/11/2062 गुरु 07/03/2063 शनि 24/07/2063 | केतु 14/08/2063 शुक्र 14/10/2063 सूर्य 01/11/2063 चंद्र 01/12/2063 मंगल 22/12/2063 राहु 14/02/2064 गुरु 03/04/2064 शनि 30/05/2064 बुध 20/07/2064 |
| बुध - शुक्र 20/07/2064 21/05/2067 | बुध - सूर्य 21/05/2067 27/03/2068 | बुध - चंद्र 27/03/2068 26/08/2069 | बुध - मंगल 26/08/2069 23/08/2070 | बुध - राहु 23/08/2070 12/03/2073 |
| शुक्र 09/01/2065 सूर्य 01/03/2065 चंद्र 27/05/2065 मंगल 26/07/2065 राहु 28/12/2065 गुरु 15/05/2066 शनि 26/10/2066 बुध 22/03/2067 केतु 21/05/2067 | सूर्य 06/06/2067 चंद्र 02/07/2067 मंगल 20/07/2067 राहु 04/09/2067 गुरु 16/10/2067 शनि 04/12/2067 बुध 17/01/2068 केतु 04/02/2068 शुक्र 27/03/2068 | चंद्र 09/05/2068 मंगल 08/06/2068 राहु 25/08/2068 गुरु 02/11/2068 शनि 22/01/2069 बुध 06/04/2069 केतु 06/05/2069 शुक्र 31/07/2069 सूर्य 26/08/2069 | मंगल 16/09/2069 राहु 10/11/2069 गुरु 28/12/2069 शनि 23/02/2070 बुध 15/04/2070 केतु 07/05/2070 शुक्र 06/07/2070 सूर्य 24/07/2070 चंद्र 23/08/2070 | राहु 10/01/2071 गुरु 14/05/2071 शनि 09/10/2071 बुध 18/02/2072 केतु 12/04/2072 शुक्र 14/09/2072 सूर्य 31/10/2072 चंद्र 16/01/2073 मंगल 12/03/2073 |
| बुध - गुरु 12/03/2073 18/06/2075 | बुध - शनि 18/06/2075 25/02/2078 | केतु - केतु 25/02/2078 24/07/2078 | केतु - शुक्र 24/07/2078 23/09/2079 | केतु - सूर्य 23/09/2079 29/01/2080 |
| गुरु 30/06/2073 शनि 08/11/2073 बुध 05/03/2074 केतु 23/04/2074 शुक्र 08/09/2074 सूर्य 19/10/2074 चंद्र 27/12/2074 मंगल 13/02/2075 राहु 18/06/2075 | शनि 20/11/2075 बुध 07/04/2076 केतु 04/06/2076 शुक्र 15/11/2076 सूर्य 03/01/2077 चंद्र 26/03/2077 मंगल 22/05/2077 राहु 17/10/2077 गुरु 25/02/2078 | केतु 05/03/2078 शुक्र 30/03/2078 सूर्य 07/04/2078 चंद्र 19/04/2078 मंगल 28/04/2078 राहु 20/05/2078 गुरु 09/06/2078 शनि 03/07/2078 बुध 24/07/2078 | शुक्र 03/10/2078 सूर्य 24/10/2078 चंद्र 29/11/2078 मंगल 24/12/2078 राहु 25/02/2079 गुरु 23/04/2079 शनि 30/06/2079 बुध 29/08/2079 केतु 23/09/2079 | सूर्य 29/09/2079 चंद्र 10/10/2079 मंगल 17/10/2079 राहु 06/11/2079 गुरु 23/11/2079 शनि 13/12/2079 बुध 31/12/2079 केतु 07/01/2080 शुक्र 29/01/2080 |

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

| | |
|--------------|------------------------|
| मूलांक | 3 |
| भाग्यांक | 9 |
| मित्र अंक | 3, 5, 7, 9 |
| शत्रु अंक | 1, 4, 8 |
| शुभ वर्ष | 21,30,39,48,57 |
| शुभ दिन | मंगल, रवि, गुरु |
| शुभ ग्रह | मंगल, सूर्य, गुरु |
| मित्र राशि | कन्या, तुला |
| मित्र लग्न | वृश्चिक, मेष, मिथुन |
| अनुकूल देवता | नृसिंह |
| शुभ रत्न | माणिक्य |
| शुभ उपरत्न | लाल हकीक, लाल तुर्मली |
| भाग्य रत्न | मूंगा |
| शुभ धातु | ताम्र |
| शुभ रंग | नारंगी |
| शुभ दिशा | पूर्व |
| शुभ समय | सूर्योदय |
| दान पदार्थ | मूंगा, केसर, रक्तचन्दन |
| दान अन्न | गेहूँ |
| दान द्रव्य | घी |

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

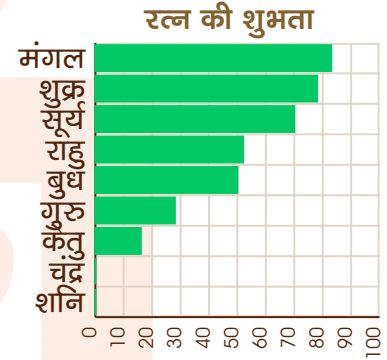
rs96531@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

| रत्न | ग्रह | शुभता | क्षेत्र |
|----------|-------|-------|---------------------------------------|
| मूंगा | मंगल | 83% | धन, भाग्योदय, सुख |
| हीरा | शुक्र | 78% | स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम |
| माणिक्य | सूर्य | 70% | कम खर्च, स्वास्थ्य |
| गोमेद | राहु | 52% | स्वास्थ्य, कम खर्च |
| पन्ना | बुध | 50% | कम खर्च, धनार्जन, धन |
| पुखराज | गुरु | 28% | शत्रु व रोग, सन्तति कष्ट, दुर्घटना |
| लहसुनिया | केतु | 16% | दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना |
| मोती | चंद्र | 0% | शत्रु व रोग, व्यय |
| नीलम | शनि | 0% | दुर्घटना, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट |



दशानुसार रत्न विचार

| दशा | समाप्ति | माणिक्य | मोती | मूंगा | पन्ना | पुखराज | हीरा | नीलम | गोमेद | लहसुनिया |
|-------|------------|---------|------|-------|-------|--------|------|------|-------|----------|
| चंद्र | 24/02/2001 | 77% | 25% | 83% | 56% | 28% | 78% | 0% | 28% | 0% |
| मंगल | 25/02/2008 | 77% | 12% | 95% | 25% | 41% | 78% | 0% | 28% | 28% |
| राहु | 25/02/2026 | 58% | 0% | 70% | 50% | 28% | 84% | 0% | 64% | 0% |
| गुरु | 25/02/2042 | 77% | 12% | 89% | 25% | 52% | 66% | 0% | 52% | 16% |
| शनि | 24/02/2061 | 58% | 0% | 70% | 56% | 28% | 84% | 0% | 58% | 0% |
| बुध | 25/02/2078 | 77% | 0% | 83% | 62% | 28% | 84% | 0% | 52% | 16% |
| केतु | 24/02/2085 | 58% | 0% | 89% | 50% | 28% | 84% | 0% | 28% | 41% |
| शुक्र | 25/02/2105 | 58% | 0% | 83% | 56% | 28% | 91% | 0% | 58% | 28% |
| सूर्य | 26/02/2111 | 83% | 12% | 89% | 50% | 41% | 66% | 0% | 28% | 0% |

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए मूंगा व हीरा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मूंगा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

हीरा आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए माणिक्य, गोमेद एवं पन्ना रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

पुखराज रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

लहसुनिया, मोती व नीलम रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है। मंगल के शुभफल प्राप्ति के लिए आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण कर आप सहनशीलता का परिचय देंगे। वाकशक्ति का चातुर्य के साथ प्रयोग करेंगे। धन का प्रवाह तीव्र होगा। पराक्रम के कार्यों में आपकी अभिरुचि जागृत होगी। मूंगा रत्न आपके जोश और ऊर्जा शक्ति का भी विस्तार करेगा। इस रत्न को धारण करने के बाद आप जीवन की बाधाओं का साहस के साथ सामना करने लगेंगे। पहल क्षमता भी आपकी पहले से अधिक बढ़ जायेगी।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में मंगल चतुर्थेश एवं नवमेश है। मंगल आपके लिए नवमेश होने के कारण शुभ ग्रह है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप कर्म से भाग्य बदलने का प्रयास कर सकते हैं। मूंगा रत्न आपको धर्मपरायण व सौभाग्यशाली बना सकता है। इस रत्न के शुभ प्रभाव से आप माता सुख, भूमि व भवन पक्ष से सबल कर सकता है। आप यह रत्न धारण कर अपने दैनिक जीवन को गौरवशाली बना सकते हैं। इसके साथ ही रत्न धारण से आपके व्यवसायिक जीवन में सुख भाव बना रहेगा।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का 9 माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम 6 रत्ती से लेकर अधिकतम 8 रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं 3 मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र लग्न भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। यह रत्न प्रेम, आकर्षण एवं विपरीत लिंग विषयों में सफलता देगा। हीरा रत्न से धन संचय करना आपके लिए सहज होगा। शुक्र लग्न भाव से सप्तम भाव को प्रभावित कर रहे हैं। इसलिए शुक्र रत्न हीरा धारण कर आप वैवाहिक जीवन को अनुकूल बनाये रख सकते हैं। यह हीरा रत्न पारिवारिक सुख-समृद्धि, स्वतंत्र व्यापार में लाभदायक सिद्ध होगा। नियमानुसार धारण किया गया हीरा आपको सुख, ऐश्वर्य, सम्मान, वैभव, विलासिता आदि दे सकता है।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में शुक्र तृतीय और दशम भाव के स्वामी हैं। अतः आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न धारण कर आप आकर्षक, कीर्तिवान, धैर्यवान, उदार, विनोदी एवं संतान से सुखी हो सकते हैं। तथा इस रत्न को धारण करने के बाद आजीविका क्षेत्र में आपको अच्छी नौकरी, व्यवसायिक सफलता, संगीत तथा कला क्षेत्रों से धन की प्राप्ति हो सकती है। यह रत्न शुभ होने के कारण आपको अभिनय, गायन एवं राजनीति क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाने के अवसर दे सकता है। पुरुषार्थ से कर्मक्षेत्र में सफलता पाने के लिए भी आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते हैं।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूठी में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा रत्न से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने से आपका विदेश गमन सहज हो सकता है। आपके आत्मविश्वास में बढ़ोतरी होगी। कार्यक्षेत्र में आपकी तरक्की होगी। माणिक्य रत्न की शुभता से आप अस्पतालों, पागलखानों, धर्मार्थ संस्थानों, जेलों और परोपकारी कामों से लाभ हो सकता है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण से आपका आत्मविश्वास भाव बेहतर होगा। आपके कार्यक्षेत्र में तरक्की होगी। सूर्य रत्न माणिक्य आपको दूर देश की यात्राएं करवा सकता है। यह आपको आर्थिक रूप से समृद्ध करेगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में सूर्य लग्न भाव के स्वामी हैं। लग्नेश सूर्य का रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य शुभता प्राप्त कर सकते हैं। लग्नेश सर्वदा शुभ फलदायक होता है। इसलिए माणिक्य भी आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। माणिक्य रत्न की शुभता से आप तेजस्वी, साहसी, स्वाभिमान, प्रभावशाली व्यक्तित्व पा सकते हैं। रत्न का शुभ प्रभाव आपको अनुशासित जीवन, वैवाहिक जीवन को अनुकूलता दे सकता है। माणिक्य रत्न को आप सरकारी क्षेत्र से जुड़े कार्यों को शीघ्र से कराने के लिए भी धारण कर सकते हैं।

यह रत्न अनामिका अंगूठी, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

कम से कम 9 माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात् सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखरी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु लग्न भाव में स्थित है। अतः आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न गोमेद आपको मनस्वी एवं साहसी बनाएगा तथा रत्न आपके चातुर्य योग्यता को बढ़ायेगा। रत्न के शुभ प्रभाव से आपको विवाद में विजय, अध्ययनशीलता एवं कार्यकुशलता कौशल की प्राप्त होगी। लग्न भाव से राहु सप्तम को देख रहे हैं जिसके कारण गोमेद रत्न धारण करने से आपका वैवाहिक जीवन सुखमय हो सकता है। इस रत्न को धारण करने से आप भ्रम मुक्त जीवन का आनंद लेंगे।

राहु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य द्वादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न आपको सेवा कर्म में सुख एवं उद्योग-धंधों में लाभ एवं सफलता देगा। इस रत्न की शुभता से आपको इहलोक और परलोक दोनों में सुख की प्राप्ति होगी। साथ ही यह रत्न आपको अनेक प्रकार के सुःख भोगने के अवसर देगा। आपके व्यर्थ के व्यर्थों को नियंत्रित करेगा। इस रत्न को पहनने पर आप ऋण मुक्त, धार्मिक, परोपकारी और प्रलोभन से मुक्त होंगे। यह रत्न शुभ होकर आपको शयन सुख देगा तथा अनिद्रा रोग का निवारण करेगा। यह रत्न पहन कर आप अपने जीवन लक्ष्यों को सहजता से प्राप्त कर पाएंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात् राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखरी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध द्वादश भाव में स्थित है। आप बुध ग्रह की शुभता पाने के

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

लिए पन्ना रत्न धारण करें। पन्ना रत्न आपको बुद्धिमान, विचारशील और विवेकी व्यक्ति बनेंगे। आपको धर्म के प्रति आस्थावान बनाएगा। यह रत्न आपको एक स्पष्ट वक्ता बनाएगा। बुध रत्न पन्ना से आपको आलस्य से बचाएगा। तथा रत्न शुभता से आप दूसरों के धन का लालच नहीं करेंगे। पन्ना रत्न शुभता आपको उच्च पद और प्रतिष्ठा देगा। बौद्धिक योग्यता से आप अपने शत्रुओं को परास्त करने में भी यह रत्न शुभ फल प्रदान करेगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में बुध द्वितीय भाव एवं एकादश भाव के स्वामी है। आप बुध रत्न पन्ना धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न आपका संचित धन बढ़ा सकता है। पन्ना रत्न को धारण कर आप के परिवार में वृद्धि के योग बन सकते हैं। यह रत्न आपके कुटुम्ब को एकसूत्र में बांधकर रख सकता है। पन्ना बुध आयेस का रत्न होने के कारण आपको बौद्धिक बल से धनार्जन करने के भरपूर अवसर दे सकता है। पन्ना रत्न की शुभता से आप को विभिन्न साधनों से आय प्राप्त हो सकती है। साथ ही इस रत्न को धारण कर आप अपनी वाकशक्ति में मधुरता एवं चतुरता दोनों का मिश्रण हो सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगुली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आप के रोगों, ऋण और शत्रुओं में वृद्धि हो सकती है। पुखराज रत्न आपकी शारीरिक प्रकृति को पीड़ित कर सकता है। विवेक, पराक्रम और उदारता भाव के लिए भी रत्न का सहयोग आपको प्राप्त नहीं हो पाएगा। पुखराज रत्न धारण करना आपके मामा और भाईयों के सुखों में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपके काम समय पर पूरे नहीं हो पायेंगे। सेवकों के कारण कार्य विलंबित हो सकते हैं। न्याय प्रणाली पर आपकी आस्था कमजोर हो सकती है। आजीविका क्षेत्र में वरिष्ठजन आपको परेशानियां दे सकते हैं।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में गुरु पंचम भाव एवं अष्टम भाव के स्वामी है। अष्टम भाव के स्वामी गुरु का रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए प्रतिकूल सिद्ध हो सकता है। पुखराज रत्न धारण से आप विदयाभिमानी हो सकते हैं। पुखराज रत्न आपमें विनम्रता भाव की कमी ला सकता है। आप प्रतिकूल बुद्धि के स्वामी हो सकते हैं। यह रत्न आपके शत्रुओं में

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

वृद्धि कर रहा है। रत्न प्रभाव से आपकी संतान को कष्ट हो सकता है। पुत्रराज रत्न आपके पिता को ऋणी कर सकता है। सरकारी नौकरी प्राप्ति में यह रत्न परेशानियां दे सकता है। नीच संगति में रहना पड़ सकता है। यह रत्न आपमें आलस्य भाव को बढ़ाएगा। रत्न धारण के बाद आपको मधुमेह रोग से बचना होगा।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने पर आपका व्यापारिक क्षेत्र में धन अधिक खर्च हो सकता है। कई बार आपका धन नष्ट हो सकता है। यह रत्न आपको आर्थिक चिंताएं दे सकता है। लहसुनिया रत्न प्रभाव से आपके द्वारा पिता का संचित धन भी नष्ट हो सकता है। यह रत्न वैवाहिक सुख कम कर सकता है। मित्रों से आपको कष्ट दिला सकता है। रत्न धारण करने के बाद यात्राएं कष्टकारी या असफल हो सकती हैं। केतु रत्न लहसुनिया धारण करने पर आपको शत्रुओं का भय हो सकता है। मित्रों से कष्ट मिल सकते हैं। कुसंगति के मित्र मिल सकते हैं। साथ ही यह रत्न वैवाहिक सुख में भी कमी कर सकता है।

केतु कुम्भ राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि आठवें भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपकी आयु में कमी होगी। आप असाध्य रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। बुरे मित्रों से आपके संबंध हो सकते हैं। यह रत्न आपमें साहस की कमी करेगा तथा आपमें उतावलापन देगा। धन संचय करना आपके लिए बेहद कठिन होगा। इस रत्न से आपके मान-सम्मान में कमी हो सकती है। यह रत्न आपकी वृद्धावस्था में कष्ट का कारण बन सकता है। रत्न प्रतिकूलता आपकी भाषा में अशिष्टता का भाव देगी। इस रत्न को पहनकर आप दुरुसाधनों से धन संचय का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको अवैध धन कमाने की ओर अग्रसर करेगा।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्रमा का मोती रत्न धारण करने पर किसी विशेष मामले में आपको अपमानित होना पड़ सकता है। आपके अपने मामा-मौसी से संबंध प्रतिकूल हो सकते हैं। अपने शत्रुओं की पहचान करना आपके लिए सरल नहीं होगा। यह रत्न आपको कफ रोगी, नेत्र रोगी, अल्पायु, आसक्त, व्यथी बना सकता है। इसके प्रभाव से आप अस्वस्थता का अनुभव करेंगे। बढ़ते कर्ज आपको मानसिक चिंताएं दे सकते हैं। कर्ज का भुगदान ज्यादा आपके लिए कष्टकारी हो सकता है। कार्यों को शीघ्रता से करने की प्रवृत्ति कार्यों में गुणवत्ता का अभाव ला सकती है। मोती रत्न आपमें असंतोष का भाव ला सकता है। आपको आंखों और पेट से संबंधित परेशानियां हो सकती हैं।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में चंद्र द्वादश भाव के स्वामी है। चंद्र रत्न मोती धारण से आपकी अस्वस्थता बढ़ सकती है। इस रत्न को धारण करने पर आपको व्यय से संबंधित चिंताएं अधिक हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपके दांपत्य जीवन में भी अनियमितता का कारण बन सकता है। रत्न धारण से आपके व्यावसायिक कार्यों में परेशानियां बनी

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

रहेंगी। यह रत्न आपको शारीरिक दुर्बलता दे सकता है। कुसंगति के व्यक्ति आपको प्रिय हो सकते हैं। जल से शारीरिक हानि का भय आपको हो सकता है। रत्न प्रभाव नजला, जुकाम से आपको पीड़ित कर सकता है। आप क्रोधी, हठी एवं निराशाभाव युक्त हो सकते हैं। नेत्रादि रोग और कुटुम्ब के कारण आपके दुःख बढ़ सकते हैं।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम धारण करने पर आप मानसिक रूप से कुछ हद तक असंतुष्ट हो सकते हैं। रत्न धारण से आपमें क्रोध की अधिकता और उत्साहहीनता आपमें देखने को मिलेगी। आप दूसरे के दोषों को शीघ्रता से सामने लायेंगे। नीलम रत्न से आपकी रुचि गूढ शास्त्रों में हो सकती है। यह रत्न आपको आलसी बना सकता है। इस रत्न का प्रभाव आपको ससुराल पक्ष के कारण हानि करा सकता है। यह रत्न आपके भाग्य में बाधक बन सकता है। नौकरी के क्षेत्र में बाधाएं और तनाव दे सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपका शिक्षा क्षेत्र बाधित हो सकता है।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में शनि षष्ठेश एवं सप्तमेश है। शनि का नीलम रत्न आपको शारीरिक, मानसिक एवं धन संबंधी कष्ट दे सकता है। यह रत्न आपको यात्रा में कष्ट दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपकी स्वास्थ्य हानि हो सकती है। नीलम रत्न धारण करने के बाद आपको सामान्य उन्नति के लिए भी विशेष संघर्ष करना पड़ सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके शत्रु समय समय पर आपकी परेशानियां बढ़ सकते हैं। आपको पैतृक ऋण देना पड़ सकता है। रत्न आपको दैनिक व्यवसाय में कठिनाईयां दे सकता है। आय व आयु दोनों के लिए यह रत्न अनुकूल फलदायी नहीं है। रत्न प्रभाव से आपका वैवाहिक जीवन कष्टमय हो सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

राहु

(25/02/2008 - 25/02/2026)

राहु की दशा में आपका हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, गोमेद, माणिक्य व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मोती, नीलम व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

गुरु
(25/02/2026 - 25/02/2042)

गुरु की दशा में आपका मूंगा व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, पुखराज व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, मोती व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(25/02/2042 - 24/02/2061)

शनि की दशा में आपका हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, माणिक्य, गोमेद व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मोती, नीलम व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(24/02/2061 - 25/02/2078)

बुध की दशा में आपका हीरा, मूंगा व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, मोती व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

केतु
(25/02/2078 - 24/02/2085)

केतु की दशा में आपका मूंगा व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया, पुखराज व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और मोती व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(24/02/2085 - 25/02/2105)

शुक्र की दशा में आपका हीरा व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, गोमेद व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और मोती व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(25/02/2105 - 26/02/2111)

सूर्य की दशा में आपका मूंगा व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और मोती, नीलम व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

शुभ रत्न

ढठवसकझढवदजझढरमवचंसउभपदकप01झ010धझ आपका शुभ रत्न - माणिक्य ढढ
वदजझढठवसकझ

आपका जन्म सिंह राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी सूर्य होता है। सूर्य सभी ग्रहों का राजा है, क्योंकि सभी ग्रह इसके चारों ओर अपनी अपनी कक्षा में चक्कर लगाते हैं। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः सिंह राशि के लग्न वाले जातकों को सिंह राशि के स्वामी ग्रह सूर्य को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। सूर्य ग्रह के लिये माणिक्य रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी सूर्य राजा का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राजा से लाभ जैसे राजनीतिक क्षेत्र में सफलता, उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को पिता का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। सूर्य ग्रह हृदय का प्रतिनिधि आत्मा आदि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको हृदय से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

माणिक्य रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य की अंगुली मानी जाती है। माणिक्य रत्न सूर्य का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् रविवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल सूर्य की होरा में श्रेष्ठ होता है। रविवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय सूर्य की होरा का होता है। माणिक्य को यदि रविवार के साथ-साथ सूर्य के नक्षत्र अर्थात् कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी और उत्तराषाढ़ा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

माणिक्य को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर नारंगी रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, सूर्य के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

सूर्य का मंत्र - ॐ घृणि सूर्याय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि सूर्य से संबंधित पदार्थ जैसे सफेद चंदन, घी, लाल कपड़ा सवा मीटर का दान करें तो माणिक्य रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन सूर्य का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या सूर्य को तांबे के पात्र से जल दें और सूर्य को नमस्कार करें तो यह माणिक्य रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक रविवार को आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

सिंह लग्न वाले जातक यदि माणिक्य रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।



Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली सिंह लग्न की है। आप अत्यंत तेजस्वी एवं आत्मविश्वासी हैं। अग्नि की ही भांति आप ऊर्जावान भी हैं किसी भी कार्य को करने से पीछे नहीं हटते हैं जो कार्य प्रारंभ करते हैं उसे पूरा करके ही बैठते हैं। नीतियाँ बनाना एवं उन पर कार्य करना आपको विशेष पसंद हो सकता है। अनुशासनहीनता आपको बर्दाश्त नहीं होती है। जो नियम आप बनाते हैं, उन पर स्वयं भी कार्य करते हैं और दूसरों से करवाते भी है। अपना मान सम्मान आपको बहुत प्रिय होता है। यदि किसी से कोई वादा करते हैं तो उसे निभाते हैं। स्थिर लग्न होने से आपके स्वभाव एवं व्यवहार में भी स्थिरता होती है। आप जो भी कहते हैं, उस पर अंत तक स्थिर रहते हैं। जिस भी कार्य को आप शुरू करते हैं उससे अंत तक जुड़े रहते हैं। आप मानसिक और

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

प्रशासनिक कार्य अच्छे से करते हैं। इसके विपरीत हो सकता है की शारीरिक कार्य करना आपको अधिक पसंद न हो। आप जिनसे प्यार अथवा मित्रता करते हैं उस पर केवल अपना ही अधिकार समझते हैं और ये ईर्ष्या की हद तक होता है।

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन भाव-भावों का सम्बन्ध जिन भी ग्रहों व भावों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती है। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन्हीं में से छठा भाव रोग, ऋण व सेवा भाव है। शत्रुओं का विचार करने के लिए भी इसी भाव का विश्लेषण किया जाता है। यह उपचय भाव भी है। इसके अलावा अर्थ भाव है। इस भाव के भावेश का अशुभ प्रभाव में होना, आपके स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता है। दूसरा त्रिक भाव अष्टम भाव है। इस भाव से जिन विषयों का विचार किया जाता है, उन विषयों में आठवा भाव आयु, दुर्घटना, आपरेशन, अपयश व नैतिक पतन हैं। इस भाव से व्यक्ति को मिलने वाला अपमान, पदच्युति, शोक, ऋण, मृत्यु तथा व्यक्ति के जीवन में आने वाली रुकावटें देखी जाती है। अंतिम त्रिक भाव द्वादश भाव है, द्वादश भाव से व्यय, हानियां, कारावास, बंधन, विदेश में जीवन आदि का विचार किया जाता है।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न के लिए षष्ठ भाव व सप्तम भाव के स्वामी शनि है, शनि षष्ठेश है, इसलिए आपको वात-पित्त रोग हो सकते हैं। विवेक व बुद्धि से शत्रुओं पर विजय, विद्या व बुद्धि से अल्प लाभ, संतान से न्यून सुख, जीवन संकटमय, व्यय अधिक, पराक्रम वृद्धि, भाई बहनों से अल्प सुख का कारण बन सकता है।

अष्टम भाव व पंचम के गुरु आपको दीर्घायु, प्रभावशाली दिनचर्या, विद्या व बुद्धि का अल्प लाभ, संतान से कष्ट, विदेश स्थानों से लाभ, माता, भूमि व सम्पत्ति से साधारण लाभ प्राप्ति के योग बना रहे हैं।

द्वादश के चन्द्र है। द्वादशेश चन्द्र मानसिक सुखों में कमी, माता सुख में कमी करता है, धन और प्रतिष्ठा की हानि होती है। इसके अतिरिक्त यह योग नजला-जुकाम और गुप्त शत्रुओं की वृद्धि करता है।

आपकी कुंडली में चन्द्र षष्ठ भाव में स्थित है। इसके परिणाम से शत्रुओं से कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। आप रोग पीड़ित, चिंताग्रस्त, व्याधिक्य करने की प्रवृत्ति से ग्रस्त हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त चन्द्र की अशुभता से आपके ऋण लेन-देन में बाधाएं आ सकती हैं।

गुरु आपके छठे भाव में है, गुरु की यह स्थिति आपको शत्रुओं की अधिकता, शत्रुविजयी, धन संचयी, पदवृद्धि, बुद्धिमान, विचारवान, भाग्यवान और आध्यात्मिक भाव प्रदान कर रहा है।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

शनि के अष्टम भाव में होने से आप दीर्घ अवधि के लिए रोगी हो सकते हैं, यह योग मानसिक सुखों में भी कमी कर रहा है। धन में कमी, व्यवसाय में हानि, पैतृक संपत्ति प्राप्ति में बाधक, संतान कष्ट दे सकता है।

सूर्य आपके द्वादश भाव में शत्रुओं की बहुलता, परन्तु शत्रुओं पर विजय, धन-धान्य से युक्त, कुशल राजनीतिज्ञ, उत्तम प्रशासक, नेत्र प्रकाश में कमी, मामा को कष्ट, और वाहनों से शारीरिक कष्ट की संभावना उत्पन्न करता है।

बुध द्वादश भाव में स्थित है, आप शत्रुओं पर बुद्धि-चतुरता से विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आपको आलस्य भाव से बचना चाहिए, साथ ही कठोर वचन बोलना भी मित्र वर्ग में आपके संबंधों की मधुरता में कमी कर सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 2, 4, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

| | | | |
|------------------------|-----------------------|-----------------------|-------|
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 17/04/1998-07/06/2000 | ----- | |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 01/11/2006-10/01/2007 | 16/07/2007-10/09/2009 | ----- |
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया | 26/01/2017-21/06/2017 | 26/10/2017-24/01/2020 | ----- |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 24/01/2020-29/04/2022 | 12/07/2022-17/01/2023 | ----- |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया | 29/04/2022-12/07/2022 | 17/01/2023-29/03/2025 | ----- |

द्वितीय चक्र:

| | | | |
|------------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 03/06/2027-20/10/2027 | 23/02/2028-08/08/2029 | 05/10/2029-17/04/2030 |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 27/08/2036-22/10/2038 | 05/04/2039-13/07/2039 | ----- |
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया | 08/12/2046-06/03/2049 | 10/07/2049-04/12/2049 | ----- |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 06/03/2049-10/07/2049 | 04/12/2049-25/02/2052 | ----- |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया | 25/02/2052-14/05/2054 | 02/09/2054-05/02/2055 | ----- |

तृतीय चक्र:

| | | | |
|------------------------|-----------------------|-----------------------|-------|
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 07/04/2057-27/05/2059 | ----- | |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 13/10/2065-03/02/2066 | 03/07/2066-30/08/2068 | ----- |
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया | 16/01/2076-11/07/2076 | 11/10/2076-15/01/2079 | ----- |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 15/01/2079-12/04/2081 | 03/08/2081-07/01/2082 | ----- |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया | 12/04/2081-03/08/2081 | 07/01/2082-20/03/2084 | ----- |

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया

फल

सम
अशुभ
शुभ
शुभ
शुभ

क्षेत्र

बदनामी
बुरा स्वास्थ्य
सन्तति
शत्रु व रोग मुक्ति
दम्पति

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति द्वितीय भाव में है। कुंडली में यह भाव मुख्य रूप से वाणी तथा कुटुम्ब का प्रतिनिधित्व करता है। अतः मंगल के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों में मतभेद का वातावरण बन सकता है। इसी कारण दक्षिण भारत में इसे कुज दोष भी माना जाता है। आपकी वाणी में भी ओजस्विता का भाव रहेगा तथा लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। धनार्जन के लिए यह स्थिति उत्तम रहेगी तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप इच्छित धन एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके पारिवारिक जनों को सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

कुंडली में द्वितीय भावस्थ मंगल की पंचम भाव पर दृष्टि से पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है साथ ही उच्च शिक्षा अर्जित करने में भी आप सफल रहेंगे। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा। यदा कदा पित या गर्मी से कोई परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। नवम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप अपने कार्यों एवं पराक्रम से भाग्य का निर्माण करेंगे। जीवन में उन्नति के पथ पर अग्रसर रहेंगे साथ ही आप भाग्य वादी न होकर कर्म करने में विश्वास रखेंगे।

इस प्रकार आप द्वितीय भावस्थ मंगल के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि को बनाएं रखेंगे तथा पारिवारिक जनों का उचित रूप से पालन करेंगे साथ ही वे भी आपको यथोचित सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे आप प्रसन्नता पूर्वक जीवन में सुखों का उपभोग करेंगे तथा एक दूसरे को सहयोग प्रदान करके

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगे ।



Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- पंचम् भाव का स्वामी नीच का होकर षष्ठ भाव में स्थित है।

आपकी कुण्डली में मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

कर्कराशि में रवि हो तो जातक कीर्तिमान, लब्धप्रतिष्ठ, कार्यपरायण, चंचल, साम्यवादी, कफरोगी, इतिहासज्ञ एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

मकर राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, पत्नी और सन्तान से प्रेम करने वाला, कवि, क्रोधी, लोभी, संगीतज्ञ, बात को शीघ्र समझने वाला एवं स्वार्थी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

मंगल

द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्रकर्ण रोगी, कटुतिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर से भक्ति, कुटुम्ब क्लेश वाला, पशुपालक, निर्बुद्धि एवं निर्धन होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

बुध

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

शुक्र

लग्न (प्रथम) में शुक्र हो तो जातक सुन्दरदेही, दीर्घायु, राजप्रिय, कामी, उच्चसरकारी पद पर आसीन, विलासी, भोगी, विद्वान्, प्रवासी, मधुरभाषी, प्रसिद्ध सुखी एवं ऐश्वर्यवान् होता है।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

सिंह राशि में शुक हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

सिंह राशि में राहु हो तो जातक चतुर, विचारक, सज्जन, नीति दक्ष एवं सत्पुरुष होता है।

केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

कुम्भ राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, कर्णरोगी, भ्रमणशील, व्ययशील एवं साधारण धनी होता है।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। सामान्यतया सिंह लग्न में उत्पन्न जातक साहसी तेजस्वी तथा पराक्रमी होते हैं। आत्मविश्वास की उनमें प्रधानता रहती है एवं स्वबुद्धि तथा पुरुषार्थ से अपने सांसारिक महत्व के शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करते हैं जिससे ये धनऐश्वर्य एवं सुख संसाधनों को प्राप्त करते हैं तथा जीवन में सुख पूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ रहते हैं। धर्म के प्रति इनकी श्रद्धा रहती है तथा परोपकार संबंधी कार्यों में भी तन मन धन से अपना सहयोग प्रदान करते हैं। साथ ही ये लोग विश्वास के पात्र भी होते हैं। राजनीति, व्यापार या कार्य क्षेत्र में ये किसी सम्मानित पद की प्राप्ति करते हैं जिससे सम्मान प्रतिष्ठा तथा यश मिलता रहता है। इसके अतिरिक्त इनमें नेतृत्व की क्षमता भी विद्यमान रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे। आप में निडरता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अपने समस्त सांसारिक महत्व के कार्यों को आप निर्भीकता तथा बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको वांछित सफलता की प्राप्ति होगी। साथ ही भौतिक सुखैश्वर्य एवं उपकरणों को अर्जित करके आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

जीवन में अवसरानुकूल आप उदारता एवं पराक्रम के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। स्वबुद्धि एवं पराक्रम के द्वारा आप उन्नति प्राप्त करेंगे प्रतियोगिता के क्षेत्र में सफल होंगे एवं आपके प्रतिद्वन्दी तथा शत्रु आपसे प्रभावित होंगे जिससे कार्यक्षेत्र में आपको इच्छित प्रतिष्ठा तथा यश की प्राप्ति होगी। परन्तु आपकी प्रवृत्ति अन्य जनों को अपने से तुच्छ समझने की भी रहेगी। अतः इससे आपके मान सम्मान में न्यूनता आएगी। अतः सतर्क रहें।

लग्न में राहु की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा यदा कदा मानसिक रूप से भी अशांति की अनुभूति करेंगे। आप में तेजस्विता का भाव प्रारम्भ से ही विद्यमान रहेगा परन्तु अनावश्यक उग्रता या क्रोध के भाव का आप प्रदर्शन करेंगे। अतः क्रोध के भाव की यत्नपूर्वक उपेक्षा करें। धनैश्वर्य से आप युक्त होंगे तथा मध्यम अवस्था में परिश्रम करके सुखैश्वर्य एवं भौतिक उपकरणों को अर्जित करेंगे। स्त्री के प्रति आपका आकर्षण रहेगा तथा अधिकांश कार्यों को उन्हीं के कहने पर सम्पन्न करेंगे।

यद्यपि स्वभाविक रूप से आप गम्भीर तथा धैर्यशाली व्यक्ति होंगे तथापि चंचलता की भी कमी नहीं होगी जिससे कार्यों को करने या निर्णय लेने में आप शीघ्रता का परिचय देंगे इससे आपको अनावश्यक व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा। भौतिक पदार्थों के प्रति आपके मन में तीव्र लालसा रहेगी तथा परिश्रमपूर्वक इनकी प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहेंगे तथा इन्हें अर्जित करके आनंदपूर्वक उपभोग करेंगे। आपका मित्रता का क्षेत्र अल्प रहेगा तथा आवश्यक मात्रा में उनसे सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। साथ ही दुष्टमित्रों से आपको सावधान भी रहना चाहिए। इस प्रकार आप पराक्रमी तेजस्वी तथा परिश्रमी पुरुष होकर जीवन में सफलताएं प्राप्त करेंगे तथा आनंदपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय भाव में कन्या राशि स्थित है जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप धन संग्रह के प्रति हमेशा यत्नशील रहेंगे तथा आपात्काल के लिए आपके पास कुछ न कुछ अवश्य रहेगा। आतिथ्य सत्कार की भावना की आप में प्रबलता रहेगी तथा इससे आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। फलतः समय समय पर आप अपने घर में अन्य जनों को आमंत्रित करते रहेंगे। आपका पारिवारिक जीवन शांत तथा प्रसन्नता से युक्त रहेगा तथा परिवार में समृद्धि बनी रहेगी। साथ ही परस्पर सेवा तथा सहयोग का भाव भी विद्यमान रहेगा। लेकिन पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति आप अल्प मात्रा में ही करेंगे तथा जो कुछ अर्जित करेंगे अपने परिश्रम एवं पराक्रम से करेंगे।

यह स्थान वाणी का प्रतिनिधि भाव है तथा इसका स्वामी बुध वाणी का प्रतिनिधि है अतः इसके प्रभाव से आपकी वाणी में धुरता रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही अपने विचारों को भी आप सरल एवं स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने में सफल होंगे। इसके साथ ही आप अपनी विद्वता से धनार्जन करेंगे तथा स्वर्ण आदि बहुमूल्य धातुओं को भी अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इस प्रकार आप धन वैभव से युक्त होकर आनन्द पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपको जीवन में समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप ऐश्वर्यशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त आधुनिक भौतिक उपकरणों एवं सुख संसाधनों से भी युक्त रहेंगे।

आप एक पराक्रमी एवं भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। पिता से भी आपको प्रचुर मात्रा में चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति होगी जिससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी। चतुर्थेश मंगल के प्रभाव से आपको जमीन जायदाद संबंधी सम्पत्ति से शीघ्र एवं उचित लाभ के योग बनते हैं। अतः यदि आप इन क्षेत्रों में पूंजी निवेश करें तो प्रचुरमात्रा में लाभ अर्जित करने में समर्थ हो सकते हैं लेकिन विवादित सम्पत्ति का आपको कभी भी क्रय विक्रय नहीं करना चाहिए।

जीवन में आप उत्तम गृह से युक्त होंगे तथा यह विस्तृत क्षेत्र में होगा। यह आधुनिक उपकरणों एवं सजावट की वस्तुओं से सुसज्जित रहेगा। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा एवं पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे लेकिन संबंधों में औपचारिकता रहेगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी उत्तम होगा तथा युवावस्था के बाद आप स्वयं के वाहन को आर्जित करके इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माता जी तेजस्वी शिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा पारिवारिक सदस्यों पर उनका पूर्ण प्रभाव रहेगा एवं सबका वह अपनी ओर से उचित देखभाल करेंगी। आपकी उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा तथा समयानुसार उनसे आप वांछित नैतिक एवं आर्थिक सहयोग से लाभान्वित होते रहेंगे। आपका भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इससे आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी रुचि रहेगी तथा अपनी बुद्धिमता से आप प्रारंभिक कक्षाओं से ही अच्छे अंक अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप स्नातक परीक्षा सम्मानित रूप से उत्तीर्ण करेंगे। इससे आपके मन में उत्साह की वृद्धि होगी तथा पूर्ण उत्साह के साथ आप भविष्य में उन्नति के लिए प्रयत्नशील होंगे। इसके अतिरिक्त आप किसी तकनीकी या व्यावसायिक शिक्षा में भी डिग्री अर्जित कर सकते हैं।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप उद्यमी साहसी तथा पराक्रमी पुरुष होंगे। उच्चशिक्षा प्राप्त करने के लिए आप हमेशा रुचिशील रहेंगे तथा इसके लिए प्रयत्न भी करेंगे जिसमें आपको न्यूनाधिक सफलता प्राप्त होगी। आप उच्च श्रेणी के धार्मिक दार्शनिक तथा ईश्वर को मानने वाले व्यक्ति होंगे तथा धर्म तथा शास्त्र के अनुसार ही अपने अधिकांश सांसारिक महत्त्व के शुभ एवं महत्त्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे। बृहस्पति के प्रभाव से आप मुक्त विचार धारा के व्यक्ति आत्म विश्वासी तथा धार्मिक क्षेत्र में उन्नति करने वाले होंगे तथा इसमें आपको श्रद्धाति तथा मान सम्मान भी प्राप्त होगा। आपकी सीखने की शक्ति अत्यंत ही तीव्र होगी तथा शीघ्र ही आप नवीन विचारों का सृजन करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही आपका अन्तर्ज्ञान हमेशा सही रहेगा।

आपकी पत्नी बुद्धिमान होगी तथा वे शांत स्वभाव की चतुर महिला होंगी। आपकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा तथा समता के भाव की उत्पत्ति वृद्धावस्था में होगी जिससे आप वांछित आदर एवं श्रद्धाति प्राप्त करेंगे। आपके साथ में वह स्थितियों को अनुकूल बनाने में समर्थ रहेंगी। आपकी संतति संख्या सीमित रहेगी तथा उनका स्वभाव भी उत्तम रहेगा। साथ ही वे बुद्धिमान होंगे एवं अपने अपने क्षेत्र में वांछित सफलता अर्जित करेंगे। वृद्धावस्था में आपकी वे श्रद्धा पूर्वक सेवा करेंगे वे सभी उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे वैदिक ज्ञान या ज्योतिष पर भी आपकी श्रद्धा रहेगी इसके अतिरिक्त आप वाहन आदि से सुसम्पन्न, शत्रुनाशक, सज्जनों की सेवा करने वाले तथा भाग्यशाली पुत्रों से युक्त रहेंगे।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा केतु भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है सामान्यतया कुम्भ राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी उग्र स्वभाव व्ययशील पित प्रकृति तथा सेवकों से युक्त रहता है तथा केतु के प्रभाव से उसमें साहस पराक्रम तथा तेजस्विता का भाव भी रहता है लेकिन सांसारिक कार्यों में वह दक्ष होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी तथा पराक्रम एवं साहस का भाव भी विद्यमान होगा। सांसारिक कार्य कलापों को वह कुशलता पूर्वक सम्पन्न करेंगी। उनकी प्रवृत्ति भी व्ययशील होगी तथा सेवकों के सुख से हमेशा युक्त होंगी लेकिन केतु के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता के भाव का अभाव रहेगा जिससे परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन कम करेंगी।

आपकी पत्नी लालिमा युक्त गौरवर्ण से युक्त होगी तथा उनका कद भी मध्यम होगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय रहेगी तथा शरीर के सभी अंग प्रत्यंग पुष्ट तथा सुडौल रहेंगे इससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी तथा व्यक्तित्व में भी आकर्षण उत्पन्न होगा। केतु के प्रभाव से आधुनिक विचारों से वे युक्त रहेंगी एवं पाश्चात्य साहित्य एवं संस्कृति का अनुकरण करेंगी। इसके अतिरिक्त कला के प्रति भी रुचि होगी तथा सुंदर वस्तुओं के संग्रह में तत्पर रहेंगी।

सप्तम भाव में केतु के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व कुछ बाधाएं भी उत्पन्न हो सकती हैं। आपका विवाह किसी बन्धु या संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा तथा कुम्भ राशि में केतु की स्थिति के प्रभाव से आप स्वेच्छा से भी विवाह कर सकते हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा एवं सुख दुख में एक दूसरे का पूर्ण ध्यान रखेंगे। परन्तु दोनों के तेजस्वी स्वभाव के कारण यदा कदा अनावश्यक वाद विवाद एवं समस्याएं उत्पन्न होंगी जिससे संबंधों में तनाव होगा अतः ऐसे समय पर आप दोनों को संयम पूर्वक व्यवहार करना चाहिए।

आपका विवाह किसी साधारण परिवार में होगा एवं आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति भी उनकी सामान्य रहेगी। लेकिन सास ससुर से सामान्य संबंध स्थापित करने में सफलता मिलेगी। उनसे आपको नैतिक सहयोग मिलता रहेगा एवं आपके प्रति मन में स्नेह की भावना रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का विशेष सेवा भाव कम होगा तथा सुख दुख में उनकी वह यथोचित सहायता नहीं करेंगी। साथ ही देवर एवं ननदों को भी अपने तेज व्यवहार से प्रसन्न रखने में असफल होंगी जिससे परिवार में शांति के वातावरण में न्यूनता आएगी।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति अच्छी नहीं रहेगी तथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी अतः यत्नपूर्वक साझेदारी की उपेक्षा करनी चाहिए।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। वृष राशि भूमितत्व युक्त ग्रह है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा जलतत्व ग्रह के प्रभाव से इसमें आप सामान्यतया परिवर्तन करते रहेंगे तथा ऐसे परिवर्तनों से आपको लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी जिससे आप मानसिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आजीविका में आपके लिए कला, संगीत, सिनेमा, नाटक, दूरदर्शन विभाग, इलैक्ट्रॉनिक्स विभाग, न्याय विभाग, न्यायधीश, वकील, सचिव, सलाहकार, फिल्म निदेशक या कलाकार के रूप में कार्य करना शुभ एवं अनुकूल होगा। इन क्षेत्रों में यदि आप अपनी आजीविका प्रारंभ करते हैं तो आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों से सुरक्षित रहेंगे। अतः आप को उपरोक्त विभागों में ही अपने कार्यक्षेत्र का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए चांदी, सोना, हीरा आदि रत्न एवं धातु का कार्य, चतुष्पद या वाहन संबंधी क्रय विक्रय, आलंकारिक एवं मूल्यवान वस्त्रों का व्यापार, सौन्दर्य प्रसाधन संबंधी कार्य, सफेद वस्त्रों या रेशमी वस्त्रों का व्यापार एवं आयात निर्यात से भी लाभ होगा। साथ ही कीमती शराब, इलैक्ट्रॉनिक्स उपकरण एवं फिल्म निर्माण का कार्य भी शुभ एवं अनुकूल रहेगा। अतः व्यापार से वांछित लाभ अर्जित करने के लिए आपको इन्हीं वस्तुओं या क्षेत्रों में व्यापार प्रारंभ करना चाहिए।

जीवन में आपको मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चपद को भी प्राप्त करने में सफल होंगे। साथ ही सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओं एवं क्लब आदि में भी आप कोई सम्मानीय पदाधिकारी हो सकते हैं। इससे आपके सामाजिक प्रभाव में वृद्धि होगी तथा यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा। इसके साथ ही आप सामाजिक एवं राज्यस्तर पर कोई सम्मान भी प्राप्त कर सकते हैं।

आपके पिता सुंदर एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा सामाजिक जन उनसे पूर्ण रूप से प्रभावित रहेंगे। साथ ही वह बुद्धिमान शिक्षित एवं मनोरंजक प्रवृत्ति के भी व्यक्ति होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा अपनत्व का भाव होगा एवं शिक्षा दीक्षा का वे उचित प्रबंध करेंगे। कार्यक्षेत्र में भी पिता से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा एवं उनके प्रभाव से भी आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। आप दोनों के परस्पर संबंधों में मधुरता रहेगी तथा सैद्धान्तिक तथा वैचारिक समानता भी होगी। इसके अतिरिक्त पिता के आप आज्ञाकारी रहेंगे तथा जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को एक दूसरे के सहयोग एवं सलाह से सम्पन्न करेंगे। इस प्रकार आपका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में षष्ठ भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि में द्वादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि में लग्न स्थान में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। शनि एवं राहु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपको कार्यक्षेत्र में सफलता नहीं मिलेगी। गुप्त शत्रु व बिरोधी आपको कार्य में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे। व्यापार को लेकर मानसिक परेशानी बनी रहेगी। इस समय के अंतराल में जल्द ही किसी पर भी विश्वास न करें और न ही जल्दबाजी में कोई महत्वपूर्ण निर्णय लें।

02 जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। उस समय आपके साथ धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। सोच को सकारात्मक बनाए रखें, क्योंकि वर्षान्त में राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अपने व्यापार व कार्यक्षेत्र में लाभ मिलना शुरू हो जाएगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम बना रहेगा। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 02 जून के बाद समय का काफी प्रतिकूल हो रहा है। जीवनसाथी की बीमारी में आपका धन व्यय होगा। साथ ही कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है।

किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। 31 अक्टूबर के बाद समय अनुकूल हो जाएगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाइयों का सहयोग प्राप्त होगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आप का वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहन शक्ति को बढ़ाएं और उचित निर्णय लें। सप्तमस्थ राहु जीवनसाथी का

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु ग्रह केदृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। उनकी शिक्षा में भी सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों के गर्भाधान के लिए बहुत सुन्दर समय चल रहा है। आपके बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा नहीं चल रहा है।

06 जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिससे कारण उसकी शिक्षा-दीक्षा प्रभावित हो सकती है परन्तु 31 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न कर सकता है। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है परन्तु एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप जल्दी अच्छे हो जाएंगे।

02 जून के बाद छोटी मोटी बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। आर्थिक मुद्दे या किसी और मुद्दे को ले कर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इन सबका नकारात्मक प्रभाव आपके सेहत पर पड़ेगा। द्वादशस्थ गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ रोग या मौसमजनित बीमारियां हो सकती हैं। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योग करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। 31 अक्टूबर के बाद आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु के दृष्टि प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को अधिक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी।

02 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता पारीक्षार्थियों को प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। जिन व्यक्तियों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। 24 नवम्बर के बाद छठे स्थान में राहु ग्रह का गोचर हो रहा है। उस समय आपको अपने करियर में सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। साथ ही 02 जून के बाद द्वादश स्थान केगुरु आपको विदेश यात्रा करा भी सकते

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

है।

चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले जातकों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा की भक्ति या मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे। 02 जून के बाद गुरु का गोचर द्वादश स्थान में होगा। उस समय आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा, सुश्रुषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत रखें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु अथवा काला कम्बल दान करें।
- गरीबों को भोजन कराएं।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं अष्टम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष षष्ठ भाव में रहेगा। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यापारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष लाभ नहीं होगा। व्यापार में सफलता प्राप्त के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती है। अतः इस समय के अन्तराल में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा।

26 जून के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलनी शुरू हो जाएगी। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपके कार्यों में सफलता मिल सकती है। 26 नवम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। धनागम के मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में आपको निवेश या किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए, नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है। लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

गुरु के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपका रुका हुआ धन मिल सकता है, जिससे आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी पैसा खर्च कर सकते हैं। भौतिक सुख सुविधा पर भी आपका अधिक खर्च होगा। 26 नवम्बर के बाद रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी और आपको ससुराल पक्ष से भी लाभ प्राप्त होगा।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक माहौल बढ़िया नहीं रहेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। एक दूसरे प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है जिससे पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। पारिवारिक स्थिति को अनुकूल बनाने में आपको मातुल पक्ष का अच्छा सहयोग मिलेगा।

26 जून बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा, उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित कुछ चिन्ताएं हो सकती हैं। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

26 जून के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। कफ, मधुमेह एवं पेट संबंधित बीमारियों के कारण आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से कभी-कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभाव होता रहेगा।

26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के साथ-साथ आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपकी धर्म पत्नी भी आपकी सेहत का पूर्ण ध्यान रखेंगी। 03 अक्टूबर के बाद आपकी सेहत फिर से प्रभावित हो सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगी। आपको

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

करियर में स्थिरता प्राप्त होगी। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको वर्ष के पूर्वार्द्ध में ही नौकरी मिल सकती है।

26 जून के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढाई-लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा के लिए समय काफी अनुकूल है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष काफी अच्छा है। द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में आपकी विदेश यात्रा होगी।

26 जून के बाद नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के प्रभाव सेलम्बी यात्राओं के प्रबल योग बन रहे हैं। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि छोटी यात्राएं कराती रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए सामान्य रहेगा। मानसिक अस्थिरता के कारण आप धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे परन्तु द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों, भिखारियों को खाना खिलाना, धार्मिक स्थान पर भण्डारा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से तन्त्र के प्रति आपका आकर्षण ज्यादा रहेगा। 26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान और बढ़ेगा। निःस्वार्थ भाव से आप पूजा पाठ में रूचि लेंगे। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे एवं उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं षष्ठ भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। अष्टम स्थान के शनि व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे है। गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट डालने की कोशिश करेंगे परन्तु सामने नहीं आएंगे। फरवरी के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके अंदर नवीन विचारधाराएं नयी योजनाओं को जन्म देंगी जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं।

नवम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका भाग्य भी आपके अनुकूल रहेगा। अतः कम समय में अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा। 24 जुलाई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नती होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में वृद्धि होगी। फरवरी के बाद व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। कर्ज इत्यादि से भी मुक्ति मिल सकती है। 24 जुलाई के बाद आपके रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं। छठे स्थान का राहु शत्रुओं से भी लाभ करा सकता है। सामाजिक व धार्मिक कार्यों में भी व्यय करेंगे।

24 जुलाई के बाद मांगलिक कार्यों में व्यय करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पैतृक संपत्ति या स्थिर धन का लाभ होगा। पंचम का राहु संतान के स्वास्थ्य पर भी धन खर्च करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में ही परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी, जिससे आपके परिवार में खुशी का माहौल बनेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। परन्तु अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

राहु ग्रह के गोचर के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचमस्थ राहु उनका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। फरवरी के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है।

24 मई के बाद पंचम स्थान का राहु आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। अतः उसके स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए। आपके बच्चों को अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा।

स्वास्थ्य

अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह होने से आपके मन में हमेशा अच्छे विचार आएंगे, जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। आपके अन्दर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी।

वर्ष के उतरार्द्ध में लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित हो सकता है। मौसमजनित बीमारी या आलस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए उत्तम रहेगा। आप अपने सारे शत्रुओं को परास्त करते हुए करियर में सफलता प्राप्त करेंगे। बेरोजगार जातकों को मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है।

24 मई के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा समय नहीं रहेगा। उनको करियर में सफलता प्राप्त के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा हो सकती है।

फरवरी के बाद नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

होगी साथ ही छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ व अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर में आपका अटूट विश्वास होगा। दान पुण्य करने में आप आगे रहेंगे परन्तु वर्ष का उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं रहेगा।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- दुर्गाजी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।



Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। नवम स्थान पर शनि एवं गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आपका भाग्य साथ देगा। व्यावसायिक उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। व्यापार में भाइयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अच्छा लाभ मिलेगा।

29 मार्च से सफलता के अच्छे अवसर मिलेंगे जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने कार्य में सफल होंगे। गुरु के प्रभाव से आमदनी के नये स्रोत खुलने की उम्मीद है। 25 अगस्त के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी व कार्य स्थल पर मान सम्मान भी बढ़ेगा। अनुभवी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलने से आप अपने व्यापार में और अधिक सुधार करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। भाग्य अनुकूल होने से आप बचत करने में सफल रहेंगे परन्तु द्वितीयस्थ मंगल के कारण आपके पारिवारिक खर्च भी बढ़ेंगे। 29 मार्च के बाद रत्नाभूषण इत्यादि वस्तु की प्राप्ति हो सकती है। पुराने कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके पिता की अहम भूमिका होगी। पंचम स्थान का राहु आपकी संतान के स्वास्थ्य पर भी व्यय करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ सामाजिक उन्नति के साथ होगा। तृतीयस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 29 मार्च के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। पंचमस्थ राहु आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है।

25 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। आपके माता पिता का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

बर्ताव ठीक नहीं रहेगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है और उनकी शिक्षा में भी रुकावटें उत्पन्न कर सकता है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। गर्भवती स्त्रियों अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है नहीं तो गर्भपात भी हो सकता है।

आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा है। उनकी शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी एवं अपने परिश्रम के बल पर लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि से अचानक स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः स्वास्थ्य संबंधित किसी भी प्रकार की लापरवाही आपके लिए अच्छी नहीं होगी। 29 मार्च से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा।

25 अगस्त से आपको खान-पान पर विशेष ध्यान देना होगा। चिकनाईयुक्त व तली हुई वस्तुओं का कम से कम सेवन करना चाहिए। कुछ बेवजह की यात्राएं और काम का बोझ आपको थका सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

आपको लगातार अथक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगा। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करा सकती है।

छठे स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगी। बेरोजगार जातकों को रोजगार मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु के प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। तीर्थ यात्रा पर जाने की योजना भी बन सकती है। 25 अगस्त के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा भी होगी।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में गुरु ग्रह की दृष्टि नवम स्थान पर पड़ रही है जिसके कारण आपका

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। आप कोई विशेष अनुष्ठान करेंगे जैसे- अखण्ड रामायण का पाठ, माता की चौकी, माता का जागरण इत्यादि।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीबों में वितरित करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।



Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

यह वर्ष आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में कुछ विशेष करेंगे जिससे आपके सहयोगी और अधिकारी भी प्रभावित होंगे। अपने दायित्वों का पूर्ण रूप से निर्वहन करेंगे राहु एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत अवरोध आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है। जैसे ही यह प्रभाव खत्म होगा आपका समय फिर से अनुकूल हो जाएगा और सब कुछ आपके हित में होने लगेगा। आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे।

जो व्यक्ति नवीन रोजगार की तलाश में हैं उन्हें अड़चनों के बाद सफलता प्राप्त होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अप्रैल के बाद आपको रोजगार से सम्बन्धित सुखद समाचार मिलने शुरू हो जाएंगे और आप पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह साल आपके लिए चुनौतियों के साथ अनेक लाभ भी लाएगा। 04 फरवरी के बाद नए निवेश करना सही नहीं होगा। भूमि, भवन एवं वाहनादि पर निवेश न करें नहीं तो आपका पैसा डूब सकता है। इस समय आप इस बात पर ध्यान दें कि भविष्य में किए जाने वाले निवेशों से लाभ किस प्रकार पाया जाए और एक सही योजना बना कर आप निवेश से लाभान्वित भी हो सकते हैं।

अप्रैल के बाद कोई खोया हुआ जरूरी दस्तावेज भी मिल सकता है। यदि ऋण के लिए आवेदन किया है तो वह भी बिना देरी के मंजूर हो जाएगा। हर प्रकार की आर्थिक परेशानियां तुरंत ही दूर हो जाएंगी। परिवार में मांलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक वातावरण में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। 04 फरवरी के बाद चतुर्थस्थ राहु आपको घरेलू जीवन में कुछ चिंताएं दे सकता है जिससे परिजनों के बीच

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

सामंजस्य बिठाने में कठिनाई पैदा होंगी। ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निबटने के लिए आपको अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी।

आपके माता-पिता का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। अचानक ही उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। मई के बाद आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा। मान-प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में समाज में आपकी एक अगल पहचान होगी।

संतान

वर्ष की शुरुआत संतान के लिए शुभ नहीं है। लग्न स्थान का राहु गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात करा सकता है। आपके बच्चों को स्वास्थ्य से संबंधित परेशानी होगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी दूसरे संतान के लिए समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपकी दूसरी संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। यदि संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय श्रेष्ठ है। आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वह अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य को लेकर चिंता बनी रहेगी। 04 फरवरी के बाद आप अपने आप को तंदरुस्त और सेहतमंद महसूस करेंगे क्योंकि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जा की वृद्धि होगी।

मई से आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि व्यायाम करना या सुबह-सुबह टहलने जाना। यदि आलस्य ने आपके अन्दर घर बना लिया है तो आपका स्वास्थ्य एक चिंताजनक विषय बन सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। चतुर्थ स्थान में राहु एवं गुरु की युति माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये भ्रम और असमंजस की स्थिति बनायेगी।

यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त करना चाहते हैं, तो नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा। शनि ग्रह के गोचर के बाद आप कोई विदेशी भाषा सीखने की तरफ आकर्षित होंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए उत्तम योग बन रहा है।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ शनि के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी-लम्बी यात्राएं भी करेंगे धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का भी अवसर प्राप्त होगा।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। 17 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

कोई भी शुभ कार्य योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। 17 अप्रैल से आप अपने कार्य-व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है इस वाक्य को चरितार्थ करेंगे

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दे एवं प्रणायाम करें।
- बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें एवं भूखे व्यक्तियों को खाना खिलाएं।
- नित्य हनुमान चालीसा का पाठ करें।



Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(25/02/2008 - 25/02/2026)

राहु की महादशा 25/02/2008 को आरम्भ और 25/02/2026 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु प्रथम भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि सातवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको सफलता, ख्याति, सम्पत्ति तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति हुई होगी। राहु की वर्तमान दशा में आपको धन की प्राप्ति और शत्रुओं पर विजय मिलेगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके शरीर के ऊपरी भाग तथा सिर में कष्ट हो सकता है। आप सरदर्द तथा पित्तदोष से ग्रसित हो सकते हैं और मौसम में परिवर्तन के कारण संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, चेहरे पर तथा माथे में फोड़ा आदि हो सकते हैं। इन मामूली शिकायतों को छोड़ आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त अच्छी रहेगी। आपको लाभ और समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपकी धार्मिक, शैक्षिक और वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण आपको सम्पत्ति और प्रतिष्ठा मिलेगी। आपको सट्टे में अच्छा लाभ मिलेगा। राहु की दशा में आपको धन का अचानक लाभ होगा। आपको मित्रों से लाभ हो सकता है। जीविका या व्यवसाय के लिए वायुयान चालन, दवा, कम्प्यूटर, मशीनरी, समुद्री सेवा, वायु-सेना आदि के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। दवा, रसायन, औजार, ड्रग, मशीनरी आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों का स्थानान्तरण हो सकता है जो अन्त में लाभदायक होगा और अचानक लाभ तथा कार्य स्थान में अप्रत्याशित पदोन्नति होगी। व्यापार व्यवसाय से जुड़े लोगों को उच्चाधिकारियों से अच्छा लाभ, कार्य में सफलता तथा आय में वृद्धि होगी। व्यवसाय में उन्नति तथा आर्थिक खुशहाली के लिए यह दशा अत्यन्त उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको वाहन का सुख मिलेगा। आपको जीवन का हर सुख मिलेगा। आप अचल तथा भूसम्पत्ति के स्वामी होंगे। इस दशा के दौरान आपकी अनेक यात्राएं होंगी। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी जबकि गुरु की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी। विदेश यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। इन्जीनियरिंग, गणित, विज्ञान, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा कम्प्यूटर विज्ञान में आपकी रुचि होगी। आपको आपके प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय मिलेगी और परीक्षा तथा प्रतियोगिता में अच्छा करेंगे। आप में नेतृत्व-गुण और

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

साहस है और आप स्वभाव से स्वतन्त्र हैं। आप चतुर और कूटनीतिज्ञ हैं।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चे भाग्यवान और खुशहाल होंगे। आपका उनके साथ सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपके जीवनसाथी की यात्रा, विदेशियों से सम्पर्क और भौतिक लाभ होगा। आपके जीवन साथी के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपकी माता यात्रा और तीर्थाटन पर जाएंगी और दान-पुण्य का कार्य करेंगी और आपके पिता को सट्टे में लाभ तथा धन में अचानक वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को हर प्रकार का लाभ तथा सम्पत्ति मिलेगी। बड़े भाई-बहन साहसी और कठिन परिश्रमी होंगे, उनकी छोटी यात्रा होगी और वे संचार-व्यवस्था के क्षेत्र में सफल होंगे। आपका उनके साथ सम्बन्ध मधुर रहेगा। इस दशा के दौरान आपको अच्छा सम्मान, भौतिक समृद्धि और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के दौरान आपको सम्पत्ति और लाभ, कार्य में सफलता और खुशहाली मिलेगी। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी यात्रा होगी और समृद्धि तथा उच्च शिक्षा की प्राप्ति होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा में व्यवसाय में प्रगति और उपार्जन अच्छा होगा। बुध की अन्तर्दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य कुछ खराब होगा, किन्तु ननिहाल से लाभ और छोटी यात्रा होगी। केतु कुछ समस्या दे सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में साझेदारों से लाभ मिलेगा और विवाह होगा जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान बच्चों से सुख और सट्टे में सफलता मिलेगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको माता से लाभ और जीवन का सुख मिलेगा जबकि लग्न स्वामी मंगल की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य तथा सफलता मिलेगी।

Pt. Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649, 9996076834

rs96531@gmail.com

**महादशा :- गुरु
(25/02/2026 - 25/02/2042)**

आपकी कुंडली में गुरु की महादशा 25/02/2026 को आरम्भ तथा 25/02/2042 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्मकुंडली में गुरु षष्ठ भाव में स्थित है। षष्ठ भाव बीमारी, रोग, कर्मचारी, नौकर, ऋण, शत्रु, मामा, तथा क्रोध का भाव है। गुरु स्वभावतः शुभ ग्रह है जिसकी षष्ठ भाव में स्थिति तथा दशम, द्वादश तथा द्वितीय भाव पर दृष्टि है और इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्षों की इस दशा में आपको कभी-कभी छोटी समस्या हो सकती है परन्तु कुल मिलाकर आपके लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य :

गुरु के रोग, शत्रु तथा ऋण के द्योतक षष्ठ भाव में स्थित होने के फलस्वरूप आपको रोग से मुक्ति मिलेगी। पैर तथा यकृत जनित रोग के प्रति सतर्कता बरतें।

अर्थ-सम्पत्ति :

गुरु की षष्ठ भाव में स्थिति तथा जीविका, खर्च और धन से संबंधित द्वादश, दशम एवं द्वितीय भाव पर इसकी दृष्टि के फलस्वरूप आपको इस दशा-काल में अपने धन की वृद्धि करने का पर्याप्त सुअवसर मिलेगा। आप अपने स्रोतों में वृद्धि करेंगे तथा विलासिता की चीजों पर खर्च करेंगे।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

व्यवसाय :

गुरु की दृष्टि दशम् भाव (केंद्र तथा कर्म भाव), द्वादश अर्थात् व्यय भाव तथा द्वितीय यानी धन भाव पर होने के कारण आपको अपने कर्म क्षेत्र में ऊपर उठने तथा धन कमाने का सुअवसर प्राप्त होगा। कभी कभार घाटे से बचने के लिए कुछ सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवनसाथी आपका पूर्ण सहयोग करेंगे तथा आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे जिससे आपका पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा।



Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

**अंतर्दशा :- गुरु - गुरु
(25/02/2026 - 14/04/2028)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 25/02/2026 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 25/02/2026 को प्रारंभ होकर 14/04/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आपको कर्ज से मुक्ति मिलेगी। नौकरी के अवसर मिलेंगे। मातहतों का सहयोग मिलेगा। मुकदमे में जीत होगी। जायदाद से आय में वृद्धि होगी; किरायेदार सहयोग करेंगे। अध्यात्म में रुचि होगी। समाज की भलाई का कार्य करेंगे। सफल होंगे। उत्तम वस्त्र, उत्तम भोजन आदि सब सुख उपलब्ध होंगे। बहुत धनी बनेंगे। मृदु, प्रभावशाली और हास्यमिश्रित वाणी के कारण लोकप्रिय होंगे।

आपके जीवनसाथी के खर्चे बढ़ सकते हैं। आपके पिता उत्तम चरित्र और सिद्धांतों वाले होंगे और सफलता प्राप्त करेंगे। माता की इच्छाएं पूर्ण होंगी; विचारों के आदान-प्रदान से आय बढ़ेगी। आपके भाई-बहनों के लिए अचल संपत्ति, धन, सुख-सुविधाएं, उत्तम स्वास्थ्य का संकेत है।

आपकी संतान को कार्यों में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो स्पर्धियों पर विजयी होंगे, कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय सुविधासंपन्न रहेगा। परामर्शदाता सौभाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों की यात्राएं होंगी।

आपका स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम रहेंगे। शुभत्व में वृद्धि के लिए ब्रह्माजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - शनि
(14/04/2028 - 26/10/2030)**

आपकी बृहस्पति की महादशा 25/02/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 12 दिन रहेगी। आपके लिए यह 14/04/2028 को प्रारंभ होकर 26/10/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपको जीवनसाथी के माध्यम से धन का लाभ होगा। वसीयत, विरासत या उपहार द्वारा धनागम हो सकता है। अचानक, अप्रत्याशित धन आ सकता है। तंत्र-मंत्र में रुचि ले सकते हैं। जीवनशैली में कुछ परिवर्तन हो सकता है। आप शक्तिशाली, प्रसिद्ध, साहसी और प्रसन्न होंगे। सम्मान में वृद्धि होगी। सुख-साधन और घरेलू सुख उपलब्ध रहेंगे। निवेश से लाभ हो सकता है। शिशु का जन्म संभव है।

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com

आपके जीवनसाथी की आय में वृद्धि होगी। आपके पिता के खर्चे बढ़ेंगे मगर आय भी अच्छी होगी। माता सुखी और भाग्यशाली रहेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए शत्रुओं पर विजय, सम्मान में वृद्धि का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी; नींव सुदृढ़ होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, सुख-साधन उपलब्ध होंगे; अचल संपत्ति से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो मामूली परिवर्तन हो सकता है, यात्रा होगी, उत्साह उत्तम रहेगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों को साझेदारों से लाभ होगा।

गंभीर बीमारियों का ठीक से इलाज करवायें। अरिष्ट से बचाव के लिए मछलियों को भोजन दें।

**अंतर्दशा :- गुरु - बुध
(26/10/2030 - 31/01/2033)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 25/02/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तृतीय अंतर्दशा बुध की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 26/10/2030 को प्रारंभ होकर 31/01/2033 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धि, स्मृति और हाजिरजवाबी का कारक है।

इस अवधि में आपके शुभ कार्यों पर खर्चे बढ़ेंगे। अध्यात्म और ध्यान में रुचि होगी। अंतर्ज्ञान शक्ति और कल्पनाशीलता उत्तम रहेंगी। शिक्षा पूर्ण होगी। कुछ परिवर्तन हो सकते हैं। सफलता के कई अवसर मिलेंगे। अध्यात्म और दर्शन में रुचि बढ़ेगी। मुकदमे में जीत होगी। मामापक्ष के लोगों से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को मानसिक शांति और घरेलू सुख मिलेंगे। आपके पिता को अचल संपत्ति और वाहन का सुख मिलेगा। माता की यात्राएं हो सकती हैं; सम्मान और उच्च पद प्राप्त करेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए धनार्जन, लाभ, सुख-सुविधाएं, भरोसेमंद मित्र, महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर हस्ताक्षर का संकेत है।

आपकी संतान परीक्षा में सफल रहेगी, ज्ञान-विज्ञान में रुचि होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मियों से लाभ होगा, धनार्जन उत्तम होगा, कार्यों में सफल रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी, कुछ परिवर्तन हो सकता है, सफल रहेंगे। व्यापारियों को स्पर्धा में सफलता मिलेगी।

स्वास्थ्य का, विशेषकर स्नायुतंत्र और नेत्रों का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध मंत्र का जाप करें।

ॐ बुं बुधाय नमः

Pt.Rahul Sharma

Mandkheri Chhachhrauli Yamunanagar

9050059649,9996076834

rs96531@gmail.com